पत्थर के लोग

निकी वेइस

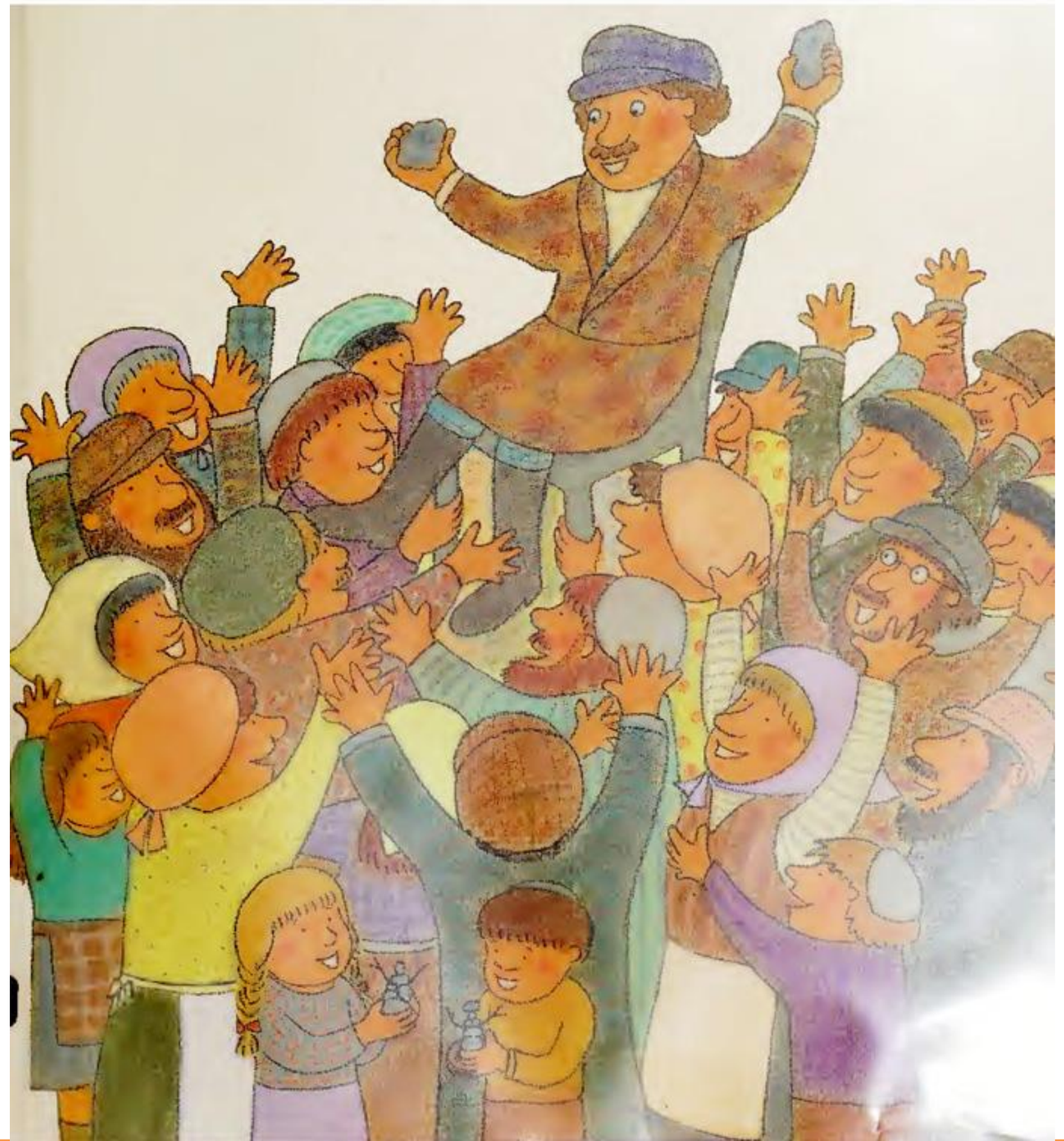

पत्थर के लोग

निकी वेइस

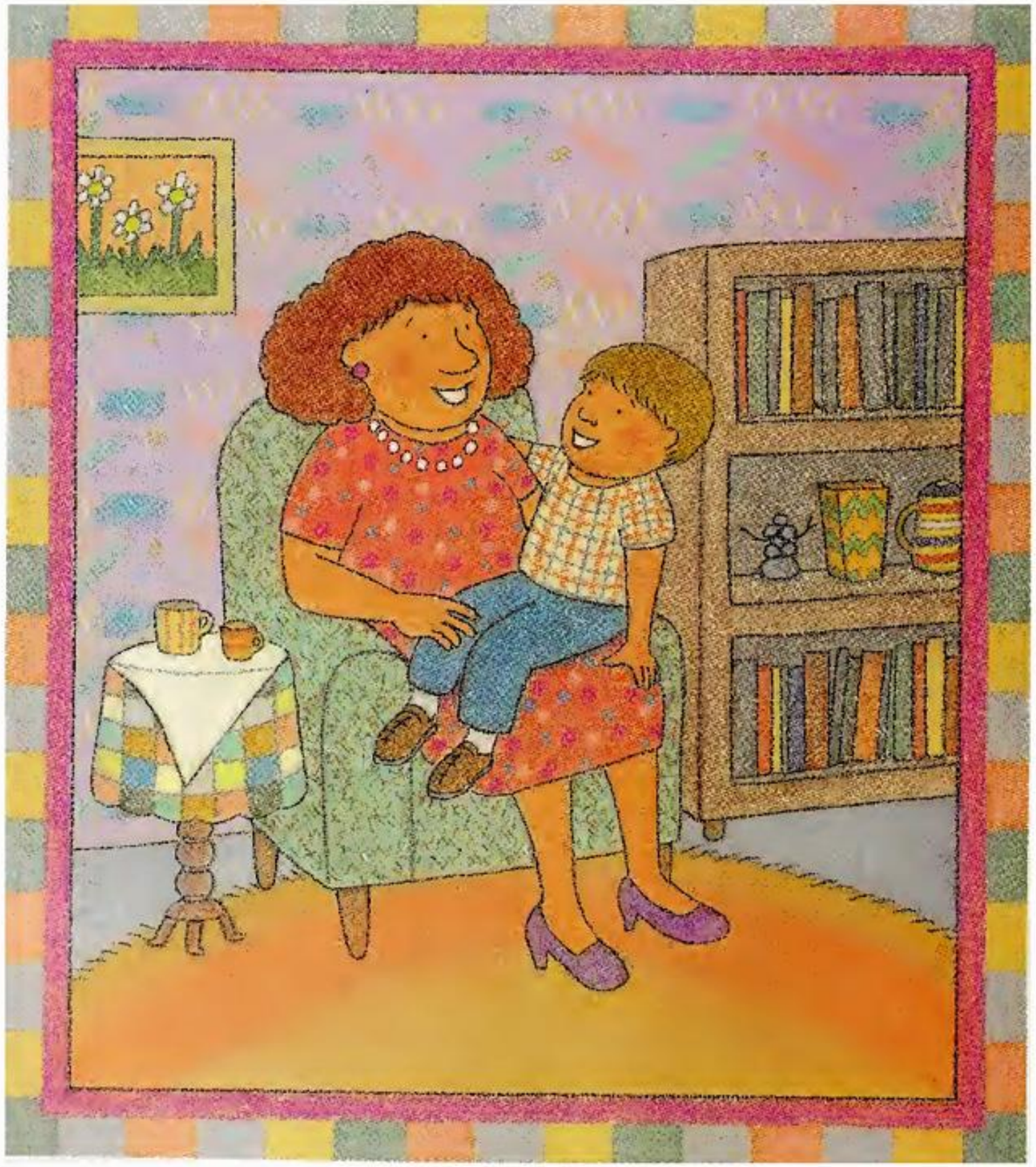

अर्नी अपनी दादी की गोद में जाकर बैठ गया.

"मुझे एक कहानी सुनाओ, दादी," उसने कहा.

"तुम्हारा मतलब मोमबत्ती बनाने वाले रूबेन की कहानी?" दादी ने पूछा,

"नहीं, नहीं" अर्नी ने कहा, "कोई नई कहानी."

"घड़ीसाज़ की पत्नी फ़्रेडा और उसकी तीन बेटियों की कहानी?" दादी ने पूछा,

"नहीं दादी," अर्नी ने कहा. "कोई नई कहानी, जिसे आपने पहले कभी नहीं सुनाया हो."

"ठीक है," दादी ने कहा. फिर उन्होंने एक पल के लिए सोचा और अपनी कहानी शुरू की ....

अच्छा सुनो, एक बार इसहाक नाम का एक फेरीवाला था. वो एक गरीब विक्रेता था, उसके पास एक ठेला-गाड़ी के अलावा और कुछ नहीं था. एक समय था जब इसहाक के पास एक खच्चर था, लेकिन वो बहुत समय पहले की बात थी.

खच्चर बुढ़ापे के कारण मर गया, और इसहाक इतना गरीब था कि वो नया खच्चर खरीद नहीं सका.

इसलिए, वो अपनी ठेला-गाड़ी को एक सुनसान गाँव से दूसरे गाँव तक, मीलों तक धकेलने लगा. एक गाँव से दूसरे गाँव तक, इसहाक धीरे-धीरे और लगातार अपनी गाड़ी को ढकेलता था.

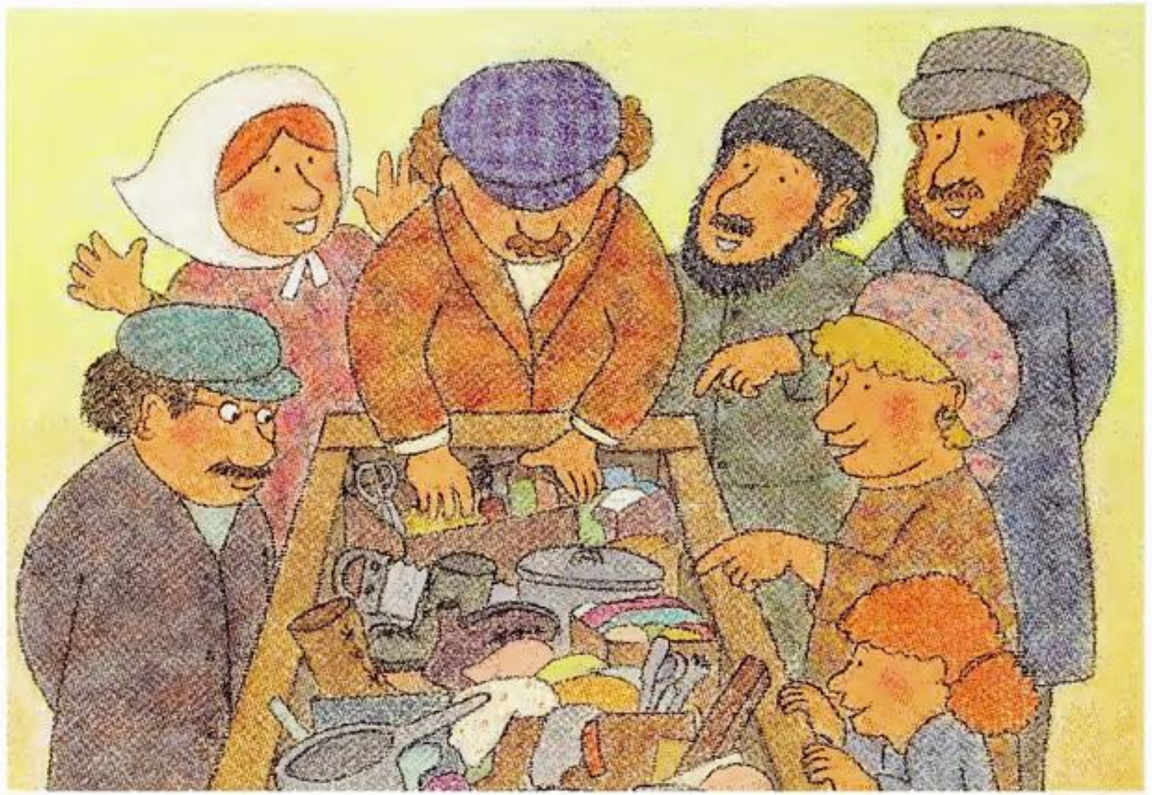

जब इसहाक अंत में किसी गाँव में पहुँचता, तो सभी उसे देखकर प्रसन्न होते थे. आखिरकार, उसकी ठेला-गाड़ी में वे सभी छोटी-छोटी चीज़ें भरी होती थीं जिनकी उन्हें ज़रूरत होती थी. लेस और कपड़ा, बर्तन और धूपदान, कीलें और बटन, पुराने जूते और नए अंडरवियर आप इन सभी चीज़ों को इसहाक से खरीद सकते थे.

"क्या तुम्हारे पास मधुमक्खी का मोम है, इसहाक?" बेनी बेकर ने पूछा.

"इसहाक, मुझे एक कॉर्क निकालने वाला स्क्रू चाहिए?" पनीर बनाने वाले की पत्नी मिन्नी ने पूछा.

इसहाक चुपचाप लोगों के हाथों में चीज़ें सौंप देता था और उनके द्वारा दिए गए धन को स्वीकार लेता था. कभी-कभी वो किसी बच्चे को एक छोटा पत्थर का बना आदमी भेंट करता था जिसे उसने अपनी यात्रा के दौरान बनाया होता था. फिर वो अपनी ठेला-गाड़ी को धकियाकर अगले गाँव की ओर बढ़ जाता था.

"वो अजीब आदमी है," कसाई ओटो ने कहा.

"वो कभी किसी से कोई बात नहीं करता है," घोड़ा व्यापारी मैक्स ने उसमें जोड़ा.

दूधवाले की बेटी लीना ने कहा, "मैदानी इलाकों में इतने सालों की यात्रा ने उसे थोड़ा अजीब बना दिया है."

इसहाक थोड़ा अजीब ज़रूर था. इतने वर्षों में उसने लोगों के साथ बहुत कम समय बिताया था और अधिक-से-अधिक समय एक गांव से दूसरे गांव घूमने में बिताया था.

और हमेशा, जैसे ही इसहाक कोई गाँव छोड़ता, और आगे जाने पर जब उसे कोई अन्य घर, व्यक्ति, या जानवर नहीं दिखता तो, इसहाक अपनी ठेला-गाड़ी रोक देता. वो पत्थरों को खोजना शुरू करता - बड़े-छोटे पत्थर, गोल-नुकीले पत्थर.

फिर वो उन पत्थरों को एक ढेर में जमाता था. वो हाथों के लिए दो शाखाएँ जोड़ता था. फिर वो अपनी ठेला-गाड़ी से एक पुराना कपड़ा लेकर पत्थरों को एक रिबन बांधता था! इस तरह वो पत्थरों के आदमी बनाता था!

जैसे-जैसे इसहाक और आगे बढ़ता, तब उसके और पत्थरों के बुतों के बीच की दूरी बढ़ती जाती. तब उसे अपने दोस्तों को देखना और कठिन हो जाता ... और अंत मे वे उसकी आंखों से ओझल हो जाते.

तब इसहाक दुबारा रुकता और फिर कुछ पत्थर इकट्ठे करता.

वो एक के ऊपर एक करके उनको सजाता.

फिर वो उसमें कुछ पत्तियां और टहनियां जोड़ता.

और फिर ठेला-गाड़ी से एक पुरानी टोपी निकालकर उन्हें सजाता.

फिर वो मीलों तक उस पत्थर के आदमी से बातें करता.

और इस तरह इसहाक आगे बढ़ता जाता. एक पत्थर के आदमी से लेकर दूसरे पत्थर के आदमी तक. इस तरह इसहाक, एक गाँव से दूसरे गाँव तक, अपनी यात्रा ज़ारी रखता था.

जब इसहाक अपने रास्ते पर आगे बढ़ते समय वो समय-समय पर पीछे मुड़कर देखता था. वहाँ उसका बनाया हुआ पत्थर का आदमी खड़ा होता था. और वो पत्थर का बुत, एक धैर्यवान मित्र की तरह हमेशा इसहाक की प्रतीक्षा करता था. वे इसहाक के दोस्त थे और वे उससे बातें करते थे. हो सकता है कि वो दोस्त जवाब न देते हों, लेकिन वे ऐसे दोस्त थे जो इसहाक के दिल की बातें सुनते जरूर थे.

अब, जैसा कि उसके भाग्य में लिखा था, इसहाक ब्रुरिया नाम के गाँव में पहुँचा, क्योंकि तब पासओवर (यहूदी पर्व) की छुट्टी आ रही थी.

यहूदी पुजारी की पत्नी एस्तेर ने कहा, “इसहाक, मुझे एक बड़ा बर्तन चाहिए.”

"इसहाक, मुझे कुछ काला धागा चाहिए?" अबे दर्जी ने अनुरोध किया.

"क्या आपने सुना है कि व्लिस्क में क्या हुआ?" मोर्दकै मुंशी ने ठेला-गाड़ी के आसपास इकट्ठे लोगों से पूछा.

"क्या?" उन्होंने एक स्वर में पूछा.

“ज़ार के सैनिकों ने आकर उस गाँव में तोड़-फोड़ की और बहुत नुक्सान पहुंचाया, ”मोर्दकै ने कहा. "अब क्योंकि उन्होंने एक गाँव में तोड़फोड़ की है," अबे ने कहा, "तो वो निश्चित रूप से दूसरे गावों को नष्ट करने की योजना भी बना रहे होंगे."

इसहाक ने चुपचाप लोगों को वो सब कुछ सौंपा जो गांववालों को चाहिए था. उसने एक बच्चे को एक छोटा पत्थर का आदमी भी भेंट किया जिसे उसने अपनी यात्रा में बनाया था. उसके बाद वो अपनी ठेला-गाड़ी लेकर अगले गाँव की ओर चल दिया. ग्रामीण लोग, इसहाक और ठेला-गाड़ी को आँखों से ओझल होने तक देखते रहे.

"वो कितना अजीब आदमी," अबे दर्जी ने कहा.

"मेरी राय में वो बहुत शांत है," यहूदी पुजारी की पत्नी ने कहा.

"ऐसा लगता है कि उसे दुनिया में अन्य किसी व्यक्ति की ज़रूरत ही नहीं है," मोर्दकै मुंशी ने कहा. "मैं उसके सामान के अलावा उसपर और अधिक निर्भर नहीं होना चाहता हूँ."

इसहाक अपने रास्ते पर चलता गया. रास्ते में रूककर उसने एक पत्थर का आदमी बनाया और फिर से चलना जारी रखा. कुछ समय बाद उसने दूसरा पत्थर का आदमी बनाया.

उसने अपनी यात्रा ज़ारी की.

फिर धीरे-धीरे मैदान के किनारे पर सूर्यास्त होने लगा और चारों ओर अंधेरा छा गया.

इसहाक रात के आराम के लिए अपनी ठेला-गाड़ी से बिस्तर उतारने ही वाला था कि उसे आगे एक टिमटिमाती रोशनी दिखाई दी. उसे कुछ लोगों की आवाजें भी सुनाई दीं. इसहाक ने ठेला-गाड़ी वहीं छोड़ दी और वो चुपके से देखने के लिए करीब गया.

एक पेड़ के पीछे से उसने सैनिकों के एक समूह को कैम्प-फायर की धधकती आग के आसपास बैठे हुए देखा!

"भोर होते ही हम ब्रुरिया तक सवारी करेंगे, इससे पहले कि लोगों को कुछ जानने का मौका मिले कि क्या हो रहा है," उसने किसी को कहते हुए सुना.

"हम तूफान की तरह गांव पर आक्रमण करेंगे!" वहां से खिसकने से पहले इसहाक ने यह आखिरी बात सुनी

केवल चन्द्रमा के प्रकाश ने ही इसहाक का मार्ग प्रकाशित किया. वो ठेला-गाड़ी के पीछे-पीछे उड़ रहा था. उसने उसी दिन बनाए पत्थर के आदमियों को अपने पीछे छोड़ा. जब इसहाक अंत में ब्रुरिया पहुंचा, तो किसी भी खिड़की में प्रकाश नहीं चमक रहा था. कोई आत्मा नहीं जागी थी. पासओवर पर्व के कुछ ही दिन बाकी थे. इसलिए गाँव में हर कोई सफाई, खाना पकाने, मरम्मत करने, सर्दियों के कपड़े उठाकर रखने और छुट्टी के व्यंजन बनाने से थक गया था.

इसहाक ने भागकर पहले दरवाजे को खटखटाया. पर वहां किसी ने कोई जवाब नही दिया. वो बगल में दौड़ा. लेकिन वहां भी उसे कोई आवाज सुनाई नहीं दी.

इसहाक के पास बर्बाद करने का समय नहीं था इसलिए वो फिर से दौड़ा.

अभी भी अँधेरा था लेकिन मोर्दकै मुंशी जाग गया था. "मुझे घोड़ों की चाप सुनाई दे रही हैं!" मोर्दकै ने अपनी पत्नी से कहा. जब वो बिस्तर से कूदा तो निश्चित रूप से, उसके पैरों के नीचे की धरती हल्के-हल्के कांप रही थी.

मोर्दकै घर से बाहर निकला और गली में भागा, और चिल्लाया, “उठो, सब लोग! रूसी ज़ार (राजा) के सैनिक आ रहे हैं!”

कुछ ही समय में सभी लोग जाग गए और गाँव में इधर-उधर भागने लगे. "हम क्या करें?" वे चिल्लाए.

लेकिन कुछ करने के लिए समय नहीं था. भागने या कोई रक्षा योजना बनाने का समय नहीं था. अनाज के सौदागर शमौन ने कहा, “उन्होंने ठीक समय हमले की सोची, ताकि वे भोर के उजाले का फायदा उठा सकें.” अब उनके गाँव को घेरने वाली पहाड़ियों के किनारों पर एक नारंगी चमक दिखाई दे रही थी.

खुरों की चापें अब तेज होती जा रही थीं, और गांववाले बढ़ रही रोशनी में घुड़सवार सैनिकों के आने की गति का अंदाजा लगा रहे थे. "इस गांव को अब कोई नहीं बचा सकता," मोची की बेटी रो पड़ी.

"हमें कोई चमत्कार चाहिए," यहूदी पुजारी ने कहा.

"बस तभी सुबह की रोशनी की एक धुंधली किरण आई, और सूरज पहाड़ियों पर हलके से झाँकने लगा. अचानक, ग्रामीणों ने विस्मय में देखा, सैनिकों ने अपनी लगाम खींची और अपने घोड़ों को रोक दिया. कुछ देर भ्रम और अव्यवस्था ज़रूर रही. फिर घोड़े अलग-अलग दिशाओं में दौड़े. फिर सभी मुड़े और सरपट दौड़ते हुए दूर चले गए!

उन्होंने जो देखा, उस पर ग्रामीणों को बिल्कुल विश्वास नहीं हुआ. "आपको लगता है कि क्या उन्होंने कोई भूत देखा होगा," बेनी बेकर ने कहा. "या भगवान के दूत को," यहूदी पादरी ने कहा.

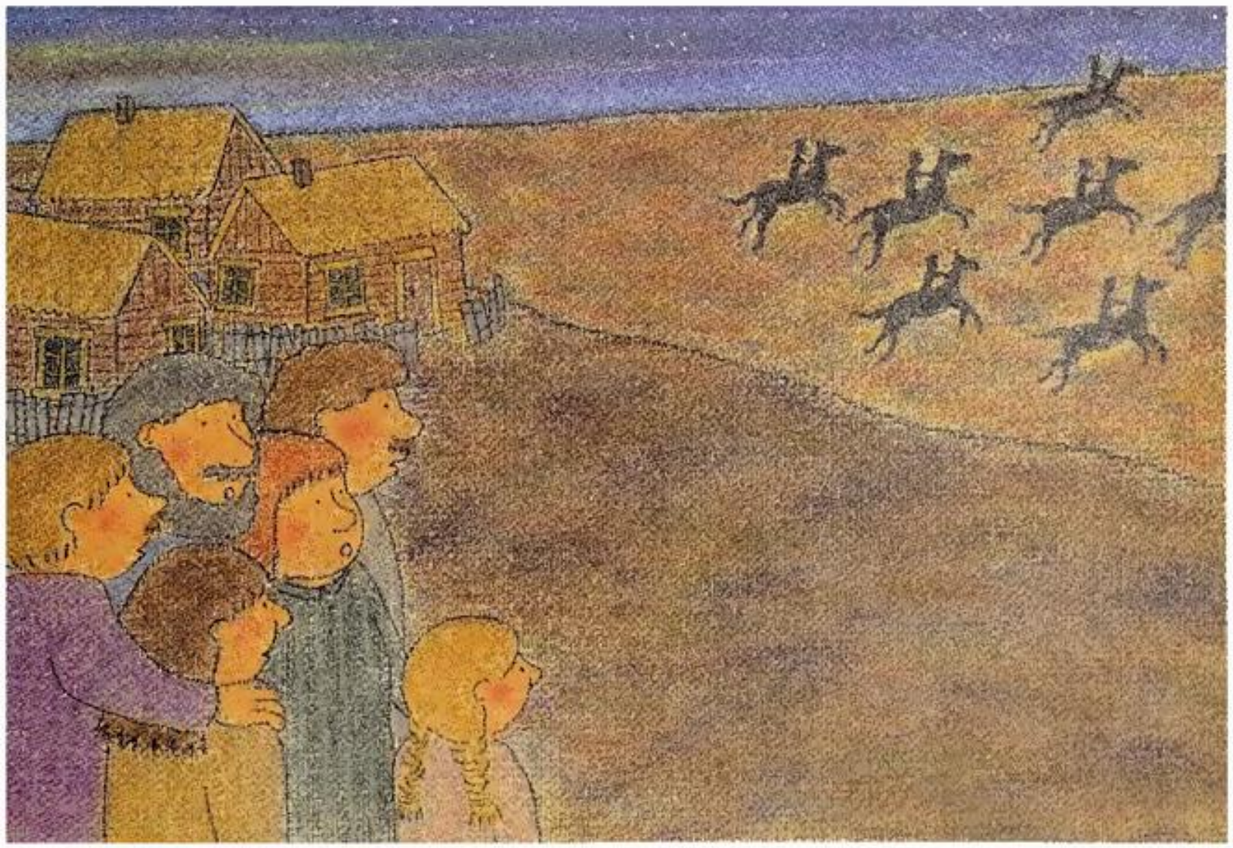

"ज़रा देखो!" अबे दर्जी चिल्लाया, और फिर सभी ने उसकी उंगली की सीध में देखा.

वहाँ उनके चारों ओर की पहाड़ियों की चोटियों पर पत्थर के बने आदमियों की एक कतार खड़ी थी. मंद रोशनी में ऐसा लग रहा था जैसे छोटे से गाँव की रक्षा करने के लिए वहां कोई सेना तैनात हो.

"अर्नी देखो, यह कहानी इस बारे मे है कि इसहाक ने ब्रुरिया गांव को कैसे बचाया," दादी ने कहा.

"क्या सच में ऐसा हुआ था दादी?" अर्नी ने पूछा.

दादी किताबों की अलमारी के पास गईं. उन्होंने शेल्फ से कुछ उठाया और उसे अर्नी को दिया.

"देखो!" दादी ने कहा. "पत्थर का बना आदमी"

"ठीक वैसा ही पत्थर का आदमी जिसे इसहाक कहानी में, गांव के बच्चे को भेंट करता था!" अर्नी ने कहा.

"वही," दादी ने कहा.

"तो आप ही वो बच्ची थीं?" अर्नी ने पूछा.

"मैंने वो सब कुछ अपनी आँखों से देखा था," दादी ने उत्तर दिया.

"लेकिन बाद में इसहाक का क्या हुआ?" अर्नी ने पूछा.

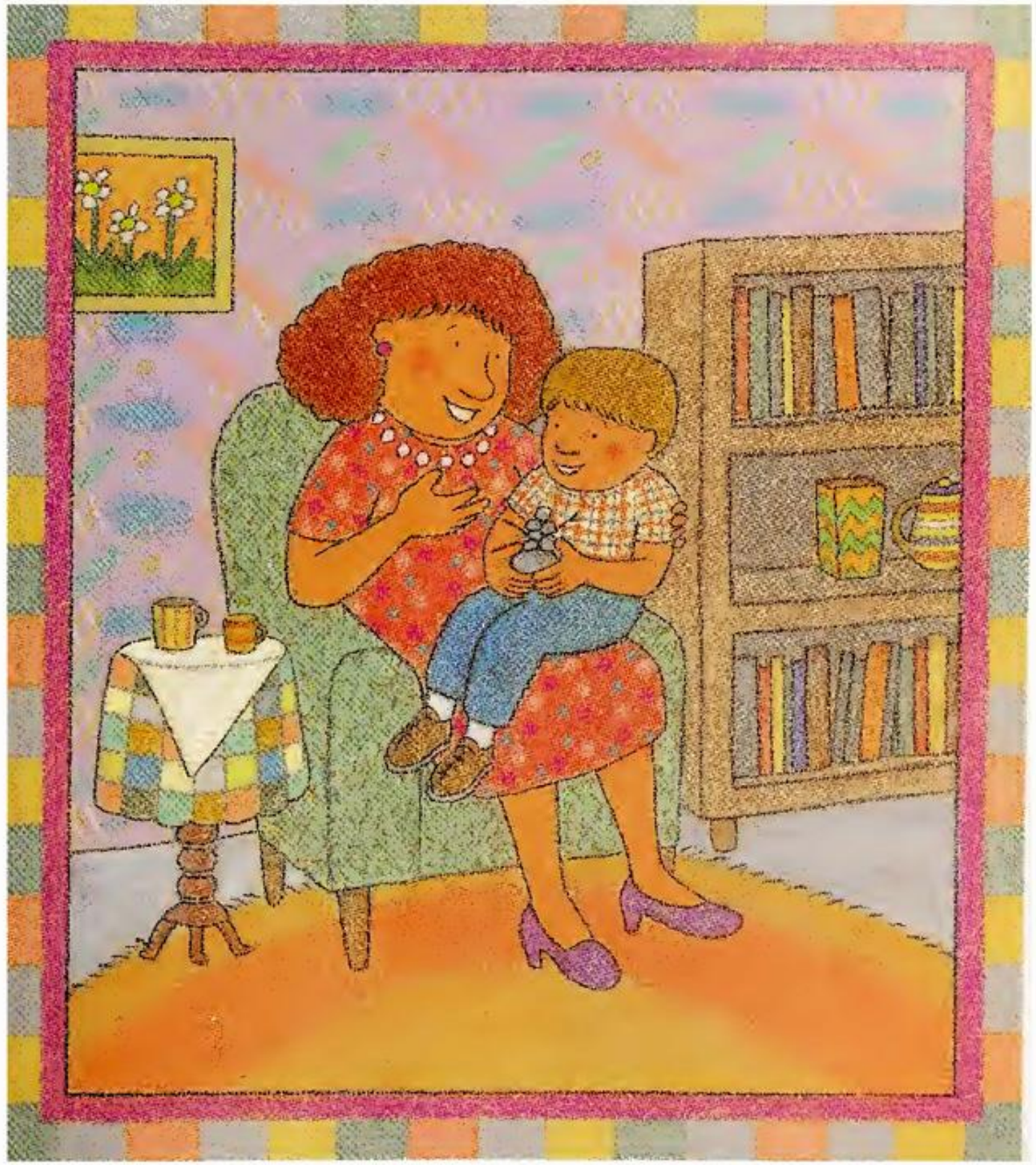

खैर, जब लोगों को पता चला कि इसहाक ने क्या किया था, तो इसहाक का बड़ा सम्मान हुआ. वो पासओवर पर्व वाले दिन यहूदी पुजारी की मेज पर एक सम्मानित अतिथि बना. छुट्टी के पूरे सप्ताह भर इसहाक का लोगों ने किसी राजा की तरह सत्कार किया.

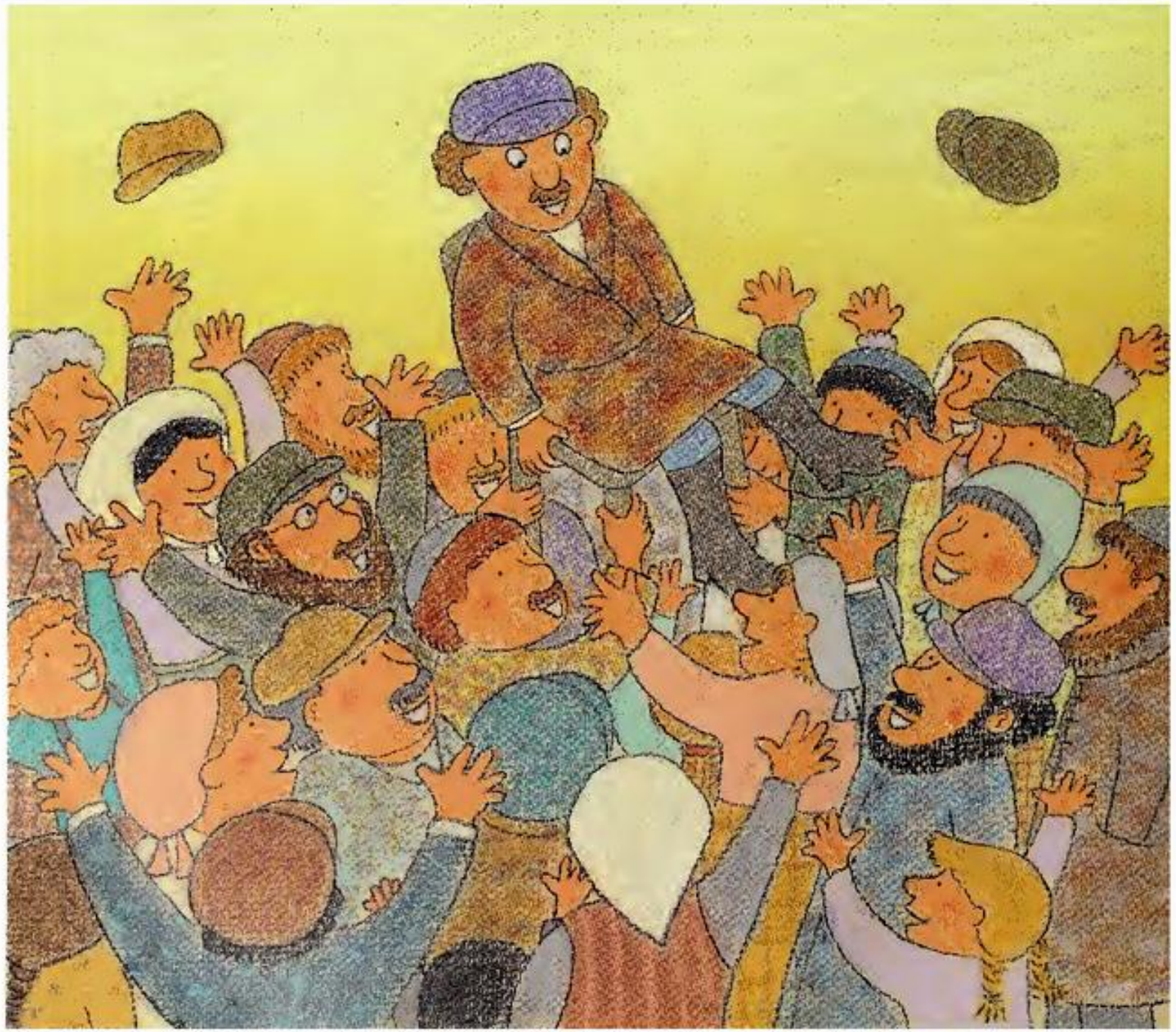

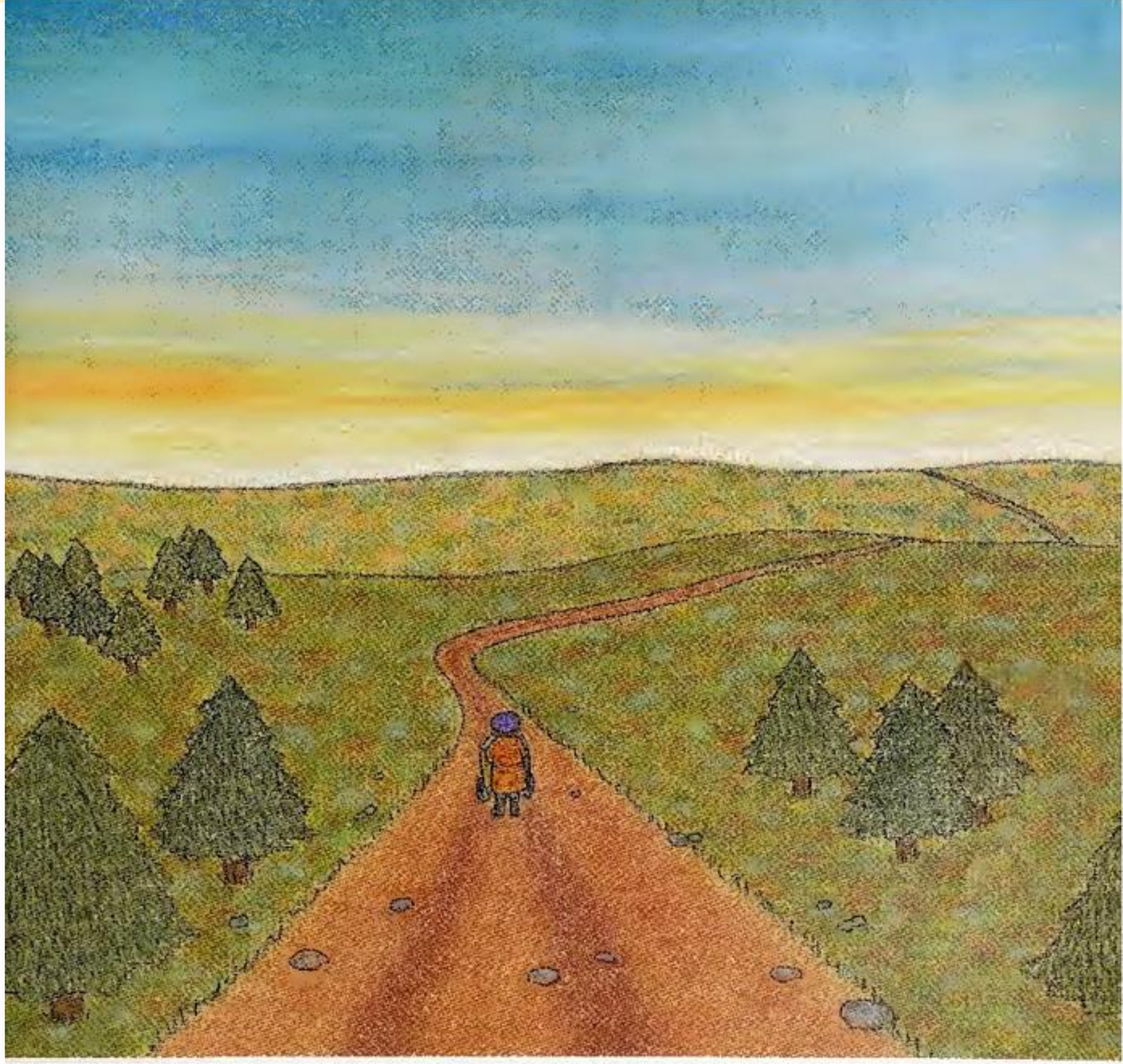

लेकिन फिर छुट्टी खत्म हो गई थी.

और हालांकि ऑस्कर व्यापारी और अबे दर्ज़ी ने, उससे हमेशा के लिए ब्रुरिया में रहने का अनुरोध किया लेकिन इसहाक ने अपनी ठेला-गाड़ी संभाली और सबसे अलविदा कहा. फिर वो दूसरे गांव की ओर चल दिया.

और जब आगे जाकर ब्रुरिया उसकी आँखों से ओझल हो गया तो इसहाक ने अपनी ठेला-गाड़ी रोकी. उसने कुछ पत्थर उठाए — कुछ छोटे, कुछ बड़े. उसने उन्हें एक-दूसरे पर टिकाया और सजाया. फिर उसने अपनी ठेला-गाड़ी से एक पुराना दस्ताना निकालकर उसे पत्थर के बुत में जोड़ा. और फिर इसहाक अपने पत्थर के मित्र से बातें करता हुए आगे बढ़ता रहा जब तक वो पत्थर का आदमी उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गया.

समाप्त